मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

बदरपुर फ्लाई ओवर–उपर स्वर्ग नीचे नरक खुले आम बिक रहा है मीठा जहर 3

लैंगिक न्याय के रास्ते पर ... माली पर साम्राज्यवादी हमला 4

सरकारी संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार अधिकार देने वाली भली सरकार 6

ईएसआईसी अधिकारियों की हरामखोरी बरकरार नगर निगम के 2 करोड़ बह गये ... 8

वर्ष 26 अंक 24 फरीदाबाद, शुक्रवार, 1-15 नवंबर 2013 फोन : - 9999595632 ₹ 2

काश ! ये जानते क्या है पाश !

शहीद स्मारक तोड़ने की तैयारी नेताओं का लालच पड़ा भारी

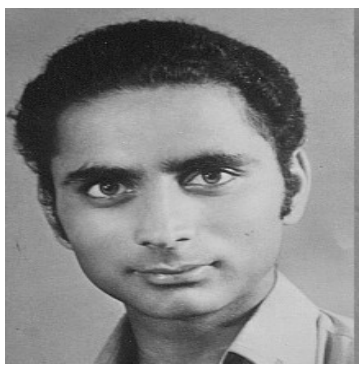

अवतार सिंह पाश :शहीद का तिरस्कार

पाश पुस्तकालय : मुनाफ़े के लिए होगा शहीद

सुमिता सिंह : लूट की दरकार

करनाल, मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

करनाल निवासियों ने शहर में कल्पना चावला मेडिकल कॉलेज बनाने की हरियाणा सरकार की घोषणा का स्वागत किया था। उन्हें क्या पता था कि इस कॉलेज की आड़ में सत्ताधारी नेता और उनके छुटभैये व्यवसायिक मुनाफ़े का खेल खेलने जा रहे हैं। स्थानीय विधायक सुमिता सिंह ने तो प्रस्तावित कॉलेज की चारों ओर की सम्पत्ति ख़रीद कर वह कहावत चरितार्थ की कि दसों अंगलियां घी में और सिर कढाई भरी चाशनी में।

कल्पना मेडिकल कॉलेज के लिए शहर की व्यस्ततम सड़कों में से एक, अस्पताल रोड, को चौड़ा कराने पर आमादा प्रॉपर्टी-डीलर नेताओं की अगुआई सुमिता सिंह ने सम्भाल रखी है। इस सड़क पर न्यायालय, पुलिस लाइन तथा इनके पीछे स्थित जेल के परिसर को हरियाणा सरकार ने कॉलेज निर्माण के लिये चिह्नत किया है। यह सारा सैंकड़ों एकड़ का क्षेत्र अस्पताल रोड से जीटी रोड, कुंजपुरा रोड, एन डी आर आई और मॉडल टाऊन तक फ़ैला हुआ है। यदि अक्ल से योजना बनाई जाय तो यहां कितनी ही पार्किंग और कितनी ही पहुंच सड़कें बनाई जा सकती हैं।

पर जब आंखों पर मुनाफ़े का चश्मा चढा लिया जाय तो न जनता की सुविधा नज़र आती है और न ही सांस्कृतिक धरोहरों की परवाह की जाती है। लिहाज़ा शहर की व्यस्ततम सड़क को ही मेडिकल कॉलेज की मुख्य सड़क बनाने की तैयारी है। बेशक इससे शहर का वह हिस्सा यातायात से 24 घंटे बाधित क्यों न रहे।

इससे भी बढ कर पंजाबी के अमर कवि अवतार सिंह पाश के स्मारक के रूप में बने जन पुस्तकालय को ढहाने की भी तैयारी है।

पाश के नाम पर बना यह पुस्तकालय 1992-93 में करनाल पुलिस के उन चार जांबाज़ कर्मियों की स्मृति में शहर की जनता ने बनाया था, जिन्होंने धर्मान्ध आतंकवादियों से पटियाला जिले में मुठभेड़ में अपने प्राणों की आहुति दी थी । ध्यान रहे कि कवि पाश को भी इन्हीं आतंकवादियों ने उनके गांव तलवंडी सलेम (ज़िला जालंधर) में अमर शहीद भगत सिंह के शहादत -दिवस, 23 मार्च को ही गोलियों से सन् 1987 में मार दिया था।

पंजाब में आतंकवाद के उस काले दौर में पाश प्रतिरोध की एक ऐसी तार्किक आवाज़ बन कर उभरा था जो आतंकवादियों की नीयत और विचारधारा दोनों को नंगा करती थी। पाश की कविताओं में जनपक्षधरता के जैसे विचार बार-बार आम जनता का आह्वान करते थे, उससे आतंकी गिरोहों की साख खत्म होती थी। पाश को इसी की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

पाश अपनी बात किस शिद्धत से कहता था, यह उसके कनाडा, जहां वह कई सालों से बस गया था, छोड़कर बार-बार भारत वापस आने और पंजाब पहुंचकर आतंकवादियों को ललकारने के जज़्बे में नज़र आता है। उसे कितनी ही बार मौखिक एवं लिखित चेतावनियां भी दी गयी थीं। भगत सिंह के क्रांतिकारी रंग में रंगे पाश ने जनता के हक में खड़े होकर लड़ाई जारी रखनी ठीक समझी न कि जान के डर से चुप हो जाना।

शेष पेज 2 पर

नई कहानी विधा के आखिरी हस्ताक्षर राजेन्द्र यादव नहीं रहे

हिन्दी की सर्वक्षेष्ट साहित्यिक पत्रिका हंस के संपादक और हिन्दी साहित्य के नामवर पुरोधा राजेन्द्र यादव ने 28 अक्टूबर रात्रि सवा ग्यारह बजे संसार को अलविदा कह दिया।

28 अगस्त 1929 को आगरा में जन्में श्री राजेन्द्र यादव ने सन् 1951 में आगरा यूनिवर्सिटी से एमए की डिग्री हासिल की और पूरे विश्व विद्यालय में प्रथम स्थान पाया।

आप का विवाह प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी से हुआ परन्तु दोनों ने थोड़े ही समय के बाद अलग-अलग रहने का निर्णय ले लिया।

पिछले 28 वर्षों से हंस का संपादन करते हुए श्री यादव ने हिन्दी साहित्य को कई नए आयाम प्रदान किए।

आप की अमर कृतियों सारा आकाश, अनदेखे अनजान पुल और कुल्टा पर फिल्मों का निर्माण भी किया गया।

श्री राजेन्द्र यादव ने रूसी लेखक चेखव के अलावा कई अन्य रूसी भाषा की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद भी किया। हंस में आप के सम्पादकीय अपनी स्पष्टवादिता, मानवाधिकारों, स्त्रीविमर्श, दलित संरक्षण और मूल्यों पर आधारित होने

28 अगस्त 1929 -28 अक्टूबर 2013

के कारण हमेशा चर्चा में रहे।

फरीदाबाद से प्रसिद्ध साहित्यकार बलदेव वंशी, रंगकर्मी ज्योति संग, शिक्षाविद डॉ. शुभ तनेजा एवं श्री यादव के काफ़ी करीबी मित्र टीएम ललानी लोधी रोड शमशान गृह पर उनकी अंतिम यात्रा में शरीक हुए।

हिन्दी साहित्य जगत की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण हस्तियों और पत्रकारों ने श्री यादव को अश्रुपूर्ण विदाई दी। श्री यादव की पुत्री रचना और उनके दामाद ने उनके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी।

मेडिकल दाखिले की धांधली सुप्रीम कोर्ट ने मान ली

तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश अल्तमस कबीर निजी मेडिकल कॉलेजों को दाखिले में लूटने का लाइसेंस दे गया था। फैसला उसने उस दिन दिया जिस दिन वह सेवानिवृत्त हो रहा था। कहते है सौदा 130 करोड़ में पटा था।

भारत सरकार ने निजी मेडिकल कॉलेजों की लूट पर लगाम कसने और लाखों विद्यार्थियों को पचासों दाखिला-टेस्टों की भागमभाग से बचाने के लिए सारे देश के मेडिकल कॉलेजों के लिए एक साझा टेस्ट शुरू करने का सिलसिला बनाया था। इससे प्राइवेट मालिकों की दुकानदारी बंद तो नहीं पर कम जरूर होती थी। वे एम बी बी एस की सीट के 40 लाख तक और पोस्ट ग्रेजुएट सीट के 80 लाख तक वसूल रहे थे, जिसमें कमी आती।

अल्तमस कबीर के फैसले के खिलाफ़ भारत सरकार ने रिव्यू-अपील दायर की जिस पर मौखिक सुनवाई सुप्रीम कोर्ट की एक 3 सदस्यीय बेंच

करेगीर। इस बेंच में दो जज तो कबीर वाली पीठ के ही होंगे जिनमे से एक ने कबीर के साथ और एक ने कबीर के विरोध में फ़ैसला किया था। तीसरे जज का निर्णय अब महत्वपूर्ण हो गया है। कानून के जानकारों का कहना है कि कबीर के सेवानिवृत हो जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट अपने साक्षात ग़लत फ़ैसले को ठीक करना चाहेगी। यदि ऐसा हुआ तो देश के लाखों विद्यार्थी सुप्रीम कोर्ट के शुक्रगुज़ार होंगे।

ख़बर दार

नवाज शरीफ़ को जल्द चुनना पड़ेगा

भारत की दोस्ती लपक या फ़ौज के हाथों टपक

भारत की पाकिस्तान से लगती नियन्त्रण रेखा पर गोलाबारी रुकने का नाम नहीं ले रही। इसी के बरक्स अमेरिका यात्रा पर निकले पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ़ ने कशमीर मसले को सुलझाने के लिये अमेरिका से मध्यस्थता कराने का राग छेड़ रखा है। देश के अन्दर शरीफ़ को तालीबानी चुनौतियों से छुट्टी मिलने के आसार नज़र नहीं आ रहे। फ़ौज के जनरल अशफ़ाक कयानी की सेवानिवृत्ति का समय सिर पर है और नये जनरल को लेकर रस्साकशी ज़ोरों पर है। लोकतान्त्रिक तरीके से पाकिस्तान में सत्ता में आया कोई भी राजनीतिज्ञ इन चुनौतियों को विरासत में पाता ही है। पिछली बार स्वंय नवाज

नवाज शरीफ़
सैन्यतंत्र या लोकतंत्र

शरीफ़ को जनरल मुशर्रफ़ ने उखाड़ फेंका था। उससे पहले बेनज़ीर भुट्टों को तो चुनाव हार कर देश से बाहर ही जाना पड़ा था। शरीफ़ की मौजूदा सरकार की पूर्ववर्ती आसिफ़ अली जरदारी के पांचसाला राष्ट्रपति कार्यकाल की एक के बाद एक तीनों सरकारें फ़ौज की गोद में बैठी रही। तीनों की छुट्टी वहां की सुप्रीम कोर्ट की दखलंदाज़ी से हुई।

शरीफ़ की मौजूदा सरकार को भी इन्हीं शिकंजों का सामना करना पड़ रहा है। सेवानिवृत्त किये जाने से चिढा कयानी भारतीय सीमा पर गोलाबारी करके भरपूर तनाव पैदा कर रहा है। फ़ौज की साथी बदनाम आई एस आई कशमीर में घुसपैठिये भेजने की मुहिम तेज किये हुए है। पाकिस्तानी तालीबानों का अपना एजेंडा है जिस पर वे नियमित रूप से चल रहे हैं। परिणामस्वरूप हर हफ़्ते वहां गोलीबारी व धमाकों में 50-60 लोग़ों का हताहत होना स्वाभाविक मान लिया गया है।

शेष पेज 2 पर